इकाई 16 काव्य वाचन एवं विश्लेषण : सुमित्रानंदन पंत

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 चयनित कविताओं का पाठ और विश्लेषण

16.3 सारांश

16.4 उपयोगी पुस्तकें

16.5 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

16.0 उद्देश्य

यह इकाई सुमित्रानंदन पंत के काव्य वाचन एवं विश्लेषण से संबंधित है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- सुमित्रानंदन पंत की तीन कविताओं की विस्तृत व्याख्या कर सकेंगे;
- पंत की कविताओं की व्याख्या की दिशाओं को जान सकेंगे;
- इन कविताओं के माध्यम से छायावाद की विशिष्टताओं को जान सकेंगे;
- पंत की काव्य-भाषा को समझने का प्रयास है;
- पंत की शब्द-योजना और शब्दावली को जान सकेंगे।

16.1 प्रस्तावना

सुमित्रानंदन पन्त का जन्म 20 मई, 1900 को हुआ था। वे कौसानी, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) के रहनेवाले थे। उनके बचपन का नाम गोसाईंदत्त था। जन्म के समय माँ की मृत्यु हो जाने के कारण पंत का बचपन भावनात्मक रूप से एक खास प्रकार की दशा में गुजरा था। एक समृद्ध परिवार में जन्म लेने के कारण उन्हें पढ़ाई-लिखाई की समुचित व्यवस्था मिली थी। अत्यंत कम उम्र से ही उनमें काव्य-प्रतिभा दिखाई पड़ने लगी थी। स्कूल के कार्यक्रमों में कविता के कई पुरस्कार उन्होंने कम ही उम्र में प्राप्त किए। अल्मोड़ा और इलाहाबाद में उनकी पढ़ाई-लिखाई हुई। 1921 में असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर उन्होंने कॉलेज की पढ़ाई छोड़ दी। इस तरह उनकी औपचारिक शिक्षा इंटरमीडिएट तक ही हो पायी।

अपना नाम उन्होंने खुद बदला था। महज 10 साल की उम्र में उन्होंने अपना नाम गोसाईंदत्त से बदलकर सुमित्रानंदन रख लिया था। साहित्य के प्रति अत्यधिक लगाव के कारण 15 साल की उम्र में ही उन्होंने स्थायी लेखन की शुरुआत कर दी थी। उनकी कविताओं के प्रकाशन की शुरुआत 'सुधाकर' नामक हस्तलिखित पत्रिका से हुई और जल्दी ही 'अलमोड़ा अखबार', 'मर्यादा' आदि पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ छपने लगीं। उन्होंने 'रूपाभ' नामक पत्रिका का संपादन भी किया। उनकी वैचारिकी पर कार्ल मार्क्स, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा अरविन्द के विचारों का असर अलग-अलग समय पर पड़ा। उन्हें ढेर सारे पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए -भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार, साहित्य

अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार, पद्मभूषण, डालमिया पुरस्कार, देव पुरस्कार, द्विवेदी पदक आदि।

उनकी रचनाओं की सूची इस प्रकार है -

काव्य-कृतियाँ

वीणा (1927), ग्रन्थि (1920ध1929), पल्लव (1926), गुंजन (1932), युगान्त (1936), युगपथ (1949), युगवाणी (1939), ग्राम्या (1940), स्वर्णकिरण (1947), स्वर्णधूलि (1947), मधुज्वाल (1947), उत्तरा (1949), रजत-शिखर (1952), शिल्पी (1952), सौवर्ण (1956), अतिमा (1955), किरण-वीणा (1967), वाणी (1958), कला और बूढ़ा चाँद (1959), पौ फटने से पहिले (1967), पतझर (एक भाव-क्रान्ति - 1967), गीतहंस (1969), लोकायतन (1965) शंखध्वनि (1971), शशि की तरी (1971), समाधिता (1973), आस्था (1973), सत्यकाम (1975), गीत-अगीत (1977), संक्रांति (1977)

नाट्य-कृतियाँ

ज्योत्स्ना (1934), परी (जनवरी, 1925), जिन्दगी का चौराहा (1939), अस्पृश्या (1937), स्रष्टा (1938), करमपुर की रानी (1949), चौराहा (1948), शकुन्तला (1948), युग-पुरुष (1948), छाया (1948)

कहानी-संग्रह : पाँच कहानियाँ (1936)

उपन्यास :हार (1917)

निबन्ध : छायावाद : पुनर्मूल्यांकन (1965), शिल्प और दर्शन (1961), कला और संस्कृति (1965), साठ वर्ष - एक रेखांकन (1969)

16.2 चयनित कविताओं का पाठ और विश्लेषण

एक

पल्लव

अरे, ये पल्लव बाल ।
सजा सुमनों के सौरभ हार
गूँथते वे उपहार
अभी तो हैं ये नवल प्रवाल,
नहीं छूटी तरु डाल
विश्व पर विस्मित चितवन डाल,
हिलाते अधर प्रवाल।
न पत्रों का मर्मर संगीत,
न पुष्पों का रस, राग, पराग
एक अस्फुट, अस्पष्ट, अगीत,
सुप्ति की ये स्वनिल मुसकान
सरल शिशुओं के शुचि अनुराग,
वन्य विहगों के गान।
हृदय के प्रणय कुंज में लीन
मूक कोकिल का मादक गान,
बहा जब तन मन बन्धन हीन
मधुरता से अपनी अनजान
खिल उठी रोओं-सी तत्काल

पल्लवों की यह पुलकित डाल।
प्रथम मधु के फूलों का बाण
दुरा उर में, कर मृदु आघात,
रुधिर से फूट पड़ी रुचिमान
पल्लवों की यह सजल प्रभात,
शिराओं में उर की अज्ञात
नव्य जग जीवन कर गतिवान।
दिवस का इनमें रजत प्रसार
उषा का स्वर्ण सुहाग,
निशा का तुहिन अश्रु शृंगार,
साँझ का निःस्वन राग,
नवोढ़ा की लज्जा सुकुमार,
तरुणतम सुन्दरता की आग।
कल्पना के ये विह्वल बाल,
आँख के अश्रु, हृदय के हास,
वेदना के प्रदीप की ज्वाल,
प्रणय के ये मधुमास
सुछवि के छाया वन की साँस
भर गयी इनमें हाव, हुलास।
आज पल्लवित हुई है डाल,
झुकेगा कल गुंजित मधुमास।
मुग्ध होंगे मधु से मधु बाल,
सुरभि से अस्थिर मरुताकाश।

(नवम्बर, 1924, पल्लव)

कठिन शब्द

पल्लव बाल - किशोर उम्र के पल्लव, नये पत्ते नवल प्रवाल - नया मूँगा, नया पत्ता विस्मित चितवन - आश्चर्य से चकित निगाहें अधर प्रवाल - मूँगे की तरह लाल पल्लव-रूपी होंठ पत्रों - पत्तों मर्मर संगीत - धीमा और कोमल संगीत राग - रंग अस्फुट - जो पूरी तरह न खुला हो अगीत - एक ऐसा गीत जो परम्परागत ढंग का न हो सुप्ति - नींद स्वप्निल मुसकान - सपने देखते हुए चेहरे पर आई मुस्कुराहट शुचि अनुराग - मासूम प्रेम वन्य विहगों - वन के पक्षी प्रणय - प्रेम कुंज - वनस्पतियों से घिरी हुई सुंदर जगह प्रथम मधु - फूलों में आया हुआ नया पराग दुरा उर में - हृदय में छिपा कर रुधिर - रक्त रुचिमान - शोभायमान, जो सुंदर लग रहा हो सजल प्रभात - सरस लगती हुई सुबह रजत प्रसार - दिन का प्रकाशित रूप ऐसे फैला है मानो चाँदी की चमक फैली हो स्वर्ण सुहाग - सुनहला सौन्दर्य तुहिन अश्रु शृंगार - ओस-रूपी आँसुओं से सुंदर लगती रात निःस्वन राग - शाम की खामोश रागिनियाँ नवोढ़ा - नव विवाहिता विह्वल - व्याकुल बाल - किशोर उम्र हृदय के हास - हृदय का हुलास प्रदीप - दीपक मधुमास - वसंत ऋतु सुछवि के छाया वन - सुंदरता की छाया से निर्मित वन हाव - शृंगारिक संकेत, पुरुष को आकृष्ट करने के लिए स्त्री के द्वारा किया जानेवाला शृंगारिक संकेत हुलास - खुशी और उत्साह मधु बाल - किशोर उम्र के भौंरे अस्थिर मरुताकाश - आकाश तक फैली हवा का बेचौन हो जाना

सन्दर्भ और प्रसंग

सुमित्रानंदन पंत ने 'पल्लव' शीर्षक कविता की रचना नवम्बर, 1924 में की थी। यह कविता 'पल्लव' (1926) काव्य-संग्रह में संगृहीत हुई। तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो पंत ने, दूसरे छायावादी कवियों की तुलना में, एक परिपक्व छायावादी काव्य-भाषा पहले प्राप्त कर ली थी। इस काव्य-भाषा को समझने में पाठक और आलोचक कुछ कठिनाई महसूस कर रहे थे। इसकी बनावट नए ढंग की थी। इनमें व्यक्त भाव भी अलग ढंग के थे। पुरानी दृष्टि से ये कविताएँ न तो ठीक से समझ में आती थीं और न ही इनका मूल्यांकन सम्भव था।

व्याख्या

सुमित्रानंदन पंत ने 'पल्लव' शीर्षक कविता में नए पत्तों के माध्यम से कुछ बातें कहने की कोशिश की है। नए पत्ते अपनी आरम्भिक अवस्था में अत्यंत कोमल और आकर्षक होते

हैं। उनमें आगे की तमाम सम्भावनाएँ भरी होती हैं। इस कविता में एक सम्भावनाशील व्यक्तित्व के रूप में 'पल्लव' को देखा गया है। पंत कहते हैं कि ये पल्लव अभी किशोर-उम्र में हैं। मानो वे कहना चाहते हैं कि छायावादी कविताएँ अभी किशोर-उम्र में हैं। इस रूपक के अनुसार इस कविता को पढ़ने पर हम एक अलग ढंग के महत्त्वपूर्ण विश्लेषण तक पहुँचते हैं।

पंत कहते हैं कि ये पल्लव (छायावादी कविताएँ) अभी कम उम्र के हैं। वे फूलों से भरते जा रहे हैं। उनसे निकलने वाली सुगंध से मानो वे हार बनाते जा रहे हैं। इस तरह पल्लवों और पुष्पों से बना सुगन्धित उपहार हमारे सामने आ रहा है। ये पल्लव अभी नए प्रवाल की तरह दिखाई पड़ रहे हैं। इनका रंग-रूप समुद्री मूँगे से मिलता-जुलता है। ये अभी इतने बड़े भी नहीं हुए हैं कि पेड़ की डाल पर स्वतंत्र रूप से लहरा सकें। इनकी डंठल अभी पूरी तरह बनी नहीं है। इन्हें ध्यान से देखिए तो मालूम होगा कि ये संसार को चकित निगाहों से देख रहे हैं, जैसे कोई बच्चा पूरी आँखें खोलकर इधर-उधर देखता हुआ सुंदर मालूम पड़ता है। इन पल्लवों को प्रवाल से बने होंठों की तरह भी महसूस किया जा सकता है। ये (छायावादी कविताएँ) अभी इतने परिपक्व नहीं हो पाए हैं कि इनके सामूहिक दोलन से पत्तों का मधुर संगीत उत्पन्न हो सके। इनमें फूलों की तरह का रस, रंग और पराग नहीं है। इनमें किसी तरह का कोई गीत भी नहीं है। इसकी ध्वनि या अभिव्यक्ति के बारे में यही कहा जा सकता है कि वह पूरी तरह व्यक्त नहीं है। वह साफ-साफ सुनाई नहीं देती है। उसे गीत नहीं 'अगीत' कहना ज्यादा अच्छा होगा। पंत कहना चाहते हैं कि पल्लव में गीत न होकर भी गीत-जैसा बहुत कुछ है। इसे (छायावादी कविताओं को) समझने के लिए अलग ढंग की समझ की जरूरत है। ये पल्लव नींद में पैदा हुई स्वप्निल मुस्कान की तरह सुंदर मालूम पड़ते हैं। इन्हें हम सरल स्वभाव वाले बच्चों के निर्दोष प्रेम की तरह मान सकते हैं। ये पल्लव (छायावादी कविताएँ) वन के पक्षियों के मुक्त गान की तरह आकर्षक लगते हैं।

हृदय में बसे हुए प्रणय-कुंज की कल्पना की जाए, फिर उसमें कोयल के मादक गान के मौन स्वरूप की कल्पना की जाए - इन्हें मिलाकर जो भाव व्यक्त होगा उसे पल्लव की तरह निर्मित मेरी कविताओं के रूप में समझना चाहिए। पंत कहते हैं कि मेरी ये कविताएँ अपनी मधुरता से अनभिज्ञ हैं। उन्हें सचेत रूप से नहीं मालूम है कि वे कितनी मधुर हैं। उनका यह भोलापन ही उनकी विशेषता है। उनके तन और मन पर किसी प्रकार का बंधन नहीं है। ये पल्लव डालियों पर ऐसे खिलते हैं जैसे सिहरन से भरकर रोएँ सजग हो जाते हैं। पंत का आशय यह है कि मेरी ये कविताएँ मेरी पुलक से भरी हैं।

पहले प्रेम की मिठास की तरह जिन फूलों में पराग आए हों और उन फूलों से कामदेव ने अपने बाण बना लिए हों- उन बाणों की तरह लगते हैं ये पल्लव और उसी तरह की हैं ये मेरी कविताएँ। ये पल्लव मानो अपने हृदय में इन बाणों को छिपाए रखते हैं और धीमे-से आघात कर देते हैं। इन पल्लवों को देखकर कामदेव के इन विशिष्ट बाणों की याद हो आती है। ये पल्लव जब खिलते हैं तो ऐसा लगता है मानो रुधिर की लाली सुरुचिपूर्ण तरीके से किसी की छवि में फैल गयी हो। ये पल्लव प्रभात के सौन्दर्य को सजल-सरसता से भर देते हैं। मेरी इन कविताओं को भी इसी तरह के क्रम और विन्यास के साथ समझने की जरूरत है। पल्लव की तरह की मेरी ये कविताएँ, संसार और जीवन के नएपन को, मन की शिराओं में सहज ही भर देती हैं।

पल्लव की तरह की मेरी इन कविताओं में ढेर सारी विशेषताएँ हैं। इनमें दिन की विस्तृत चमक है, उषा का सुनहला सौन्दर्य है, आँसू-जैसे ओसकणों से सजी हुई रात है और शाम की खामोश रागिनियाँ हैं। इनमें नव-विवाहिता की सुकुमार लज्जा है और तरुणाई की बेबाक खूबसूरती भी है। मेरी ये कविताएँ कल्पना की व्याकुल किशोरावस्था हैं, इनमें आँखों के छलकते आँसू हैं, इनमें हृदय का हुलास है, इनमें गहरे दुःख से बने दीपक की ज्वाला है, ये कविताएँ प्रेम की वसंत ऋतु हैं।

पंत 'पल्लव' की कविताओं को, रूपक के माध्यम से परिभाषित कहते हुए, अगली पहचान बताते हैं कि सुंदरता की छाया से निर्मित वन में चलने वाली मंथर हवा की तरह हैं ये कविताएँ। इस मंथर हवा ने ही इनमें हाव-भाव और खुशी-उत्साह का संचार किया है। आज मेरी कविता की डाली केवल पल्लवित हुई है, कल इस डाली के आस-पास भौंरों की गुंजार से भरा हुआ वसंत खुद झुक कर चला आएगा। तब इन कविताओं के पास मधु और पराग की इतनी बहुतायतता होगी कि किशोर उम्र के भौंरे इन पर मुग्ध हो उठेंगे। इनसे इतनी सुगंध फैलेगी कि धरती से लेकर आकाश तक व्याप्त वायु बेचौन हो उठेगी।

पंत ने इस कविता में पल्लव और अपनी कविता की विशेषताओं को इस तरीके से घुला मिला दिया है कि उन्हें उपमा-रूपक-रूपकातिशयोक्ति-श्लेष आदि अलंकारों की तकनीक से अलग-अलग कर नहीं दिखाया जा सकता है। इनकी पहचान तो स्पष्ट है, परंतु इनका उपयोग सादृश्यमूलकता के परंपरागत अर्थ और रूप में नहीं हुआ है।

काव्य सौष्ठव / विशेष

- इस कविता में पल्लव और कविता के रूपक को अद्‌भुत ढंग से निभाया गया है।
- छायावादी कविता को समझने के लिए जिस तरह के सौन्दर्य-बोध की जरूरत थी, उसे समझाने की कोशिश इस कविता में दिखाई पड़ती है।
- छायावादी कवि अपनी कविताओं की बोधगम्यता को लेकर सजग चिंतित थे, जिसका प्रकटीकरण इस कविता में हुआ है।
- 12 और 16 मात्राओं की पंक्तियों से इस कविता का निर्माण हुआ है, मगर किसी नियमित क्रम में ये पंक्तियाँ नहीं हैं।

दो

प्रथम रश्मि का आना रंगिणि।
तूने कैसे पहचाना?
कहाँ, कहाँ हे बाल विहंगिनि ।
पाया तूने यह गाना ?
सोयी थी तू स्वप्न नीड़ में
पंखों के सुख में छिपकर,
ऊँघ रहे थे, घूम द्वार पर,
प्रहरी से जुगनू नाना,
शशि किरणों से उतर-उतरकर
भू पर कामरूप नभचर
चूम नवल कलियों का मृदु मुख
सिखा रहे थे मुसकाना,
स्नेह हीन तारों के दीपक,
श्वास शून्य थे तरु के पात,
विचर रहे थे स्वप्न अवनि में,
तम ने था मण्डप ताना,
कूक उठी सहसा तरुवासिनि।
गा तू स्वागत का गाना,
किसने तुझको अंतर्यामिनि।
बतलाया उसका आना?
निकल सृष्टि के अन्ध गर्भ से
छाया तन बहु छाया हीन,

चक्र रच रहे थे खल निशिचर
चला कुहुक, टोना माना,
छिपा रही थी मुख शशिबाला
निशि के श्रम से हो श्रीहीन,
कमल क्रोड़ में बन्दी था अलि
कोक शोक से दीवाना,
मूर्छित थीं इन्द्रियाँ, स्तब्ध जग,
जड़ चेतन सब एकाकार,
शून्य विश्व के उर में केवल
साँसों का आना-जाना,
तूने ही पहले बहु दर्शिनि।
गया जागृति का गाना,
श्री सुख सौरभ का नभचारिणि।
गूँथ दिया ताना-बना।
निराकार तम मानो सहसा
ज्योति पुंज में हो साकार,
बदल गया द्रुत जगत जाल में
धर कर नाम रूप नाना,
सिहर उठे पुलकित हो द्रुम दल
सुप्त समीरण हुआ अधीर,
झलका हास कुसुम अधरों पर,
हिल मोती का-सा दाना,
खुले पलक, फैली सुवर्ण छवि,
खिली सुरभि, डोले मधु बाल,
स्पन्दन कम्पन औ' नव जीवन
सीखा जग ने अपनाना,
प्रथम रश्मि का आना, रंगिणि,
तूने कैसे पहचाना?
कहाँ, कहाँ, हे बाल विहंगिनि।
पाया यह स्वर्गिक गाना?

(1919, वीणा)

सन्दर्भ और प्रसंग

सुमित्रानंदन पंत की 'प्रथम रश्मि' कविता 1919 में लिखी गयी थी और 'वीणा' (1927) में संगृहीत हुई थी। यह कविता छायावाद की शुरुआती कविताओं में प्रमुख है। इसमें छायावादी प्रवृत्तियों को प्रमुखता से व्यक्त होने का अवसर प्राप्त हुआ था। पंत ने प्रारम्भिक दौर में ही जिस तरह की परिपक्व छायावादी काव्य-भाषा प्राप्त कर ली थी, उसका सुन्दर उदाहरण है यह कविता। पन्त ने इस कविता में चिड़िया को सम्बोधित करके कुछ बातें कही हैं। यह चिड़िया किशोर उम्र की है। वे उसे 'बाल विहंगिनी' कहते हैं, जिसका अर्थ है 'बालिका चिड़िया'। प्रकृति में मनुष्य को देखने का यह एक सुंदर उदाहरण है। वे उस चिड़िया से कोमलतापूर्वक बात करते हैं। इस एक-तरफा संवाद में रोमानियत की अंतर्धारा बहती हुई जान पड़ती है। नामवर सिंह ने अपनी पुस्तक 'छायावाद' में एक अध्याय का नाम ही रखा है - 'प्रथम रश्मि'। इस अध्याय में उन्होंने छायावाद के प्रारंभ पर विचार किया है। जाहिर-सी बात है कि अध्याय का नाम काव्यात्मक होने के बावजूद इस संकेत को लिए हुए है कि छायावाद के प्रारंभ को 'प्रथम रश्मि' कविता के माध्यम से भी चिह्नित करने की जरूरत है। छायावाद अपने चारों कवियों में सबसे ज्यादा पन्त के द्वारा ही 1918 से प्रारंभ होने के प्रमाण जुटा पाता है। 1918 में निराला और महादेवी की कविताएँ नहीं

मिलती हैं। उस समय महादेवी वर्मा मात्र 11 वर्ष की थीं। निराला यद्यपि पंत से दो-चार वर्ष बड़े थे, मगर उनकी पहली कविता 1920 की मिलती है। जयशंकर प्रसाद यद्यपि वरिष्ठ थे और काफी कुछ लिख चुके थे, मगर छायावादी कविताओं के मामले में उनकी गति और क्षमता बाद में प्रकट हुई।

कठिन शब्द

प्रथम रश्मि - सुबह की पहली किरण रंगिणि - रंगीन पक्षियों को सम्बोधन बाल विहंगिनि - किशोर उम्र की चिड़िया को सम्बोधन स्वप्न नीड़ - घोंसले मानो चिड़िया के सपनों को जगह देते हैं शशि किरणों - चाँदनी कामरूप - अपनी इच्छा से रूप धारण करने वाले नभचर - आकाश में चलनेवाले बादल स्नेह हीन - (दीपक में) तेल की कमी हो जाना तारों के दीपक - दीपक की तरह दिखनेवाले तारे श्वास शून्य - हवा का रुक जाना अवनि - धरती मण्डप - शामियाना तरुवासिनि - पेड़ों पर रहनेवाली चिड़िया को सम्बोधन अंतर्यामिनि - भूत-भविष्य और गुप्त बातों को जान लेनेवाली चिड़िया को सम्बोधन सृष्टि के अंध गर्भ से - रात में प्रकृति की गोद से छाया तन - जिनकी केवल छाया हो, भूत-प्रेत छाया हीन - जिनकी छाया नहीं बनती हो, भूत-प्रेत खल - दुष्ट निशिचर - रात में सक्रिय हो जानेवाले, भूत-प्रेत कुहुक - इन्द्रजाल, जादू का जाल फैलाना टोना माना - जादू करना शशिबाला - चाँद मानो एक स्त्री की तरह है निशि के श्रम - रति-श्रम श्रीहीन - थका होना कमल क्रोड़ - कमल की गोद अलि - भौंरा कोक - चकवा स्तब्ध जग - रात में सोया हुआ संसार स्तब्ध था एकाकार - एक आकार में दिखाई पड़ना शून्य विश्व - रात में सोया हुआ संसार मानो शून्य की तरह लग रहा था बहु दर्शिनि - ढेर सारी चीजों को देख लेनेवाली चिड़िया को सम्बोधन श्री - शोभा, सौन्दर्य नभचारिणि - आकाश में विचरण करनेवाली चिड़िया को सम्बोधन ताना-बाना - कपड़े की बुनाई में चौड़ाई और लम्बाई में धागे का लगना, माहौल बनाना निराकार तम - अन्धकार ने मानो सबके आकार को समाप्त कर दिया था, अँधेरा आकार-विहीन होता है द्रुत - शीघ्र द्रुम दल - पौधों-वृक्षों की पत्तियाँ सुप्त समीरण - ठहरी हुई हवा सुवर्ण छवि - सुबह की सुनहली आभा मधु बाल - किशोर उम्र के भौंरे, अनाज की मीठी बालियाँ स्पन्दन - गति, हलचल स्वर्गिक गाना - स्वर्ग की तरह के सुंदर गीत

व्याख्या

बालिका चिड़िया को सम्बोधित करते हुए पंत कह रहे हैं कि हे रंगोंवाली चिड़िया। तुम्हें कैसे पता चलता है कि सुबह होनेवाली है? सुबह की पहली किरण (प्रथम रश्मि) के आने से पहले ही तुम उसके आने का संकेत कर देती हो। तुम कैसे पहचान जाती हो कि 'प्रथम रश्मि' आनेवाली है? पंत की इस प्रकार की जिज्ञासा को 'बाल सुलभ जिज्ञासा' कहा गया है। इस कविता में वे कई बार इस तरह की जिज्ञासा प्रकट करते हैं। पंत आगे पूछते हैं कि हे बाल विहंगिनी (बालिका चिड़िया)। तुमने इतना सुंदर गायन कहाँ-कहाँ से प्राप्त किया है?

भोर से पहले तुम अपने घोंसले में सोयी थी और सुंदर सपने देख रही थी। सोते समय तुमने अपने शरीर को पंखों से ढँक रखा था। इस तरह तुम सुखपूर्वक सोती हुई सपनों में डूबी थी। तुम्हारे घोंसले के आसपास जुगनू घूम रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो वे पहरेदार हों और तुम्हारे दरवाजे की रक्षा कर रहे हों। हालाँकि सुबह होने तक वे जुगनू मानो थक गए थे और ऊँघते हुए घूम-घूम कर पहरेदारी कर रहे थे।

पंत भोर के पहले के कई दृश्य इस कविता में उपस्थित कर रहे हैं। अगला दृश्य यह है कि चाँद की किरणों के सहारे बादल धरती पर उतर रहे थे। बादल तो कामरूप (इच्छा के अनुसार रूप धारण करना) होते हैं और आकाश में चलते हैं। मगर चाँदनी की डोर पकड़कर और ओस की बूँदें बनकर वे धरती पर उतर आए हैं। उन बादलों ने नवल कलियों के कोमल मुख को इतने प्रेम से चूमा है कि कलियों ने खिलते हुए मुस्कुराने की कला सीख ली है।

एक और दृश्य देखिए। आकाश के तारे रात में दीपकों की तरह चमक रहे थे। भोर होने से पहले ऐसा लगा मानो उन दीपकों में तेल समाप्त हो गया हो और वे बुझते-बुझते-से जल रहे हों। धरती पर हवा लगभग रुक गयी थी। पेड़ के पत्ते ऐसे स्थिर हो गए थे मानो

वे साँस भी नहीं ले रहे हों। धरती के सभी प्राणी सोये थे। चारों तरफ अँधेरा छाया था और केवल सपनों का आवागमन मालूम पड़ रहा था। किसी को आभास नहीं था कि अब रात समाप्त हो गयी है और 'प्रथम रश्मि' यहाँ पहुँचने के लिए चल पड़ी है।

ऐसे समय में तुम अचानक कूक उठी। तुम तो पेड़ों पर रहती हो। तुम्हें कैसे पता चल जाता है कि 'प्रथम रश्मि' आने ही वाली है। इन पंक्तियों में पन्त 'तरुवासिनी' के रूप में कोयल को याद कर रहे हैं क्योंकि यहाँ 'कूक' शब्द का प्रयोग हुआ है। हे तरुवासिनी। तुम सहसा स्वागत के मीठे गीत के तराने उठाने लगी। तुम तो अंतर्यामिनी मालूम पड़ती हो। लगता है जैसे तुम्हें छिपी हुई बातों की भी जानकारी रहती है। पंत इस अंश में दो तरह की बातें कह रहे हैं - पहली यह कि तुम अंतर्यामिनी हो और दूसरी यह कि बता दो कि तुम्हें 'प्रथम रश्मि' के आने के बारे में किसने बतलाया?

यहाँ इस कविता का पहला हिस्सा पूरा होता है।

रात्रि के अंतिम प्रहर के कुछ और दृश्य अंकित करते हुए पन्त लिखते हैं कि सृष्टि गहरे अँधेरे में डूबी हुई है। उस रहस्यमय अँधेरे के भीतर से मानो भूत-प्रेत-बेताल जैसी शक्तियाँ बाहर निकल आयी थीं। पंत यहाँ लोकमान्यताओं का उपयोग कर रहे हैं, जिनके अनुसार रात में पैशाचिक शक्तियाँ सक्रिय हो जाती हैं। रात में छाया के रूप में या छायाहीन शरीर के रूप में निकलकर ये दुष्ट निशाचर जादू-टोना और मायावी कर्म कर रहे थे।

चाँद ढल रहा था। ऐसा लग रहा था मानो चाँद एक स्त्री की तरह था। उसके चेहरे पर अपने प्रिय से मिलन और रति-कर्म के निशान मौजूद थे। इस बात को पंत ने अपनी शैली में लिखा है कि रात के रति-श्रम से थककर शशिबाला का चेहरा कांतिहीन हो चुका है। वह अपना चेहरा छिपाते हुए चली जा रही है। वह मानो डर रही है कि उसके चेहरे पर मौजूद प्रिय-मिलन के चिह्नों को कोई देख न ले। इससे उसका उपहास किया जा सकता है। यह तो आकाश में हो रहा था। धरती पर जलाशयों में कमल संकुचित थे। कमल की बंद पंखुड़ियों के भीतर भौंरा कैद था। अब तो सुबह होने पर ही कमल की पंखुड़ियाँ खुलेंगी और भौंरा निकल पाएगा। दूसरी तरह चकवा-चकई एक-दूसरे को देखने के लिए चीत्कार कर रहे हैं। कवि-समय है कि चकवा-चकई आस-पास होकर भी रात में एक-दूसरे को देख नहीं पाते हैं। सुबह होने पर उनकी मुलाकात हो पाती है।

पूरी धरती सोयी हुई थी। मानो सभी इन्द्रियाँ मूर्च्छित हो गयी हों। संसार स्तब्ध लग रहा था। रात के अँधेरे और सन्नाटे में जड़-चेतन एक-जैसे लग रहे थे, क्योंकि किसी में गति और ध्वनि नहीं थी। सूनेपन के कारण विश्व एक शून्य की तरह लग रहा था। ऐसा मालूम पड़ता था कि संसार के हृदय में केवल साँसों का आना-जाना ही हो पा रहा है।

इन परिस्थितियों में हे बाल विहंगिनी। तुमने जागृति का गाना गाया। तुम 'बहु दर्शिनी' हो। तुम ढेर सारी चीजों को देख लेने की क्षमता रखती हो। तुम्हारे गान से श्री (शोभा), सुख और सौरभ का ताना-बाना पूरे माहौल में बन गया।

यहाँ इस कविता का दूसरा हिस्सा पूरा होता है।

अंतिम चरण में सुबह का चित्रण है।

अँधेरा तो आकार-विहीन होता है। सुबह हुई और प्रकाश फैलने लगा। ज्योति-पुंज में मानो निराकार अँधेरा साकार होकर दिखाई पड़ने लगा। जैसे-जैसे रोशनी फैलती गयी, संसार की अनेकानेक चीजें अपने रूप और नाम के साथ सामने प्रकट होने लगीं। अब तक तो न रूप दिख रहा था और न उन्हें नाम से जानने की गुंजाइश थी। सब कुछ अँधेरे में डूबा था और केवल एक आकार दिख रहा था जिसे 'अँधेरा' ही कहा जा सकता है।

सुबह होते ही पौधों में गतिशीलता पैदा हुई। ऐसा लगा मानो वे पुलक और सिहरन से भर

गए हों। मानो सोयी हुई हवा चल पड़ी हो। फूलों की पंखुड़ियों पर ओस की बूँदें मोती के दानों की तरह ढुलक पडीं। यूँ लगा कि फूलों के होंठों पर हँसी झलक पड़ी हो।

बंद पलकें खुल गयीं, स्वर्ण छवि चारों तरफ फैल गयी, सुगंधित वायु प्रवाहित होने लगी और तरुण उम्र के भौंरे डोलते हुए घूमने लगे। स्पंदन, कम्पन और जीवन की नूतनता को संसार ने मानो अपनाना सीख लिया हो।

तुम रंगों से परिपूर्ण हो। हे बाल विहंगिनी। तुमने 'प्रथम रश्मि' का आना कैसे पहचान लिया। तुमने स्वर्ग की तरह के सुंदर गान को कहाँ-कहाँ से प्राप्त किया?

काव्य सौष्ठव/विशेष

- यह छायावाद की शुरुआती कविताओं में प्रमुख है।
- इसके प्रश्नों में बाल-सुलभ जिज्ञासा है।
- यह कविता 'प्रकृति के सुकुमार कवि' पंत की पहचान बन गयी है।
- 16 और 14 मात्राओं की पंक्तियों के क्रम में पूरी कविता लिखी गयी है।
- प्रकृति में मनुष्य को देखने की छायावादी प्रवृत्ति का यह सुन्दर उदाहरण है।
- यह अपने ढंग से जागरण की कविता है।

तीन

मौन निमंत्रण

स्तब्ध ज्योत्स्ना में जब संसार
चकित रहता शिशु-सा नादान,
विश्व के पलकों पर सुकुमार
विचरते हैं जब स्वप्न अजान,

न जाने, नक्षत्रों से कौन
निमंत्रण देता मुझको मौन ।

सघन मेघों का भीमाकाश
गरजता है जब तमसाकार,
दीर्घ भरता समीर निःश्वास,
प्रखर झरती जब पावस धार,
न जाने, तपक तड़ित में कौन
मुझे इंगित करता तब मौन।
देख वसुधा का यौवन भार
गूँज उठता है जब मधुमास,
विधुर उर के-से मृदु उद्‌गार
कुसुम जब खुल पड़ते सोच्छ्‌वास,
न जाने, सौरभ के मिस कौन
सँदेशा मुझे भेजता मौन ।
शुब्ध जल शिखरों को जब वात
सिन्धु में मथ कर फेनाकार,
बुलबुलों का व्याकुल संसार
बना बिथुरा देती देती अज्ञात,

उठा तब लहरों से कर कौन
न जाने, मुझे बुलाता मौन।
स्वर्ण, सुख, श्री, सौरभ में भोर
विश्व को देती है जब बोर,
विहग कुल की कल कंठ हिलोर
मिला देती भू नभ के छोर,
न जाने, अलस पलक दल कौन
खोल देता तब मेरे मौन।
तुमुल तम में जब एकाकार
ऊँघता एक साथ संसार,
भीरु झींगुर कुल की झनकार
कँपा देती तन्द्रा के तार,
न जाने, खद्योतों से कौन
मुझे पथ दिखलाता तब मौन।
कनक छाया में, जब कि सकाल
खोलती कलिका उर के द्वार,
सुरभि पीड़ित मधुपों के बाल
तड़प, बन जाते हैं गुंजार,
न जाने, ढुलक ओस में कौन
खींच लेता मेरे दृग मौन।
बिछा कार्यों का गुरुतर भार
दिवस को दे सुवर्ण अवसान,
शून्य शय्या में, श्रमित अपार,
जुड़ाती जब मैं आकुल प्राण,
न जाने मुझे स्वप्न में कौन
फिराता छाया जग में मौन।
न जाने कौन, अये द्युतिमान।
जान मुझको अबोध, अज्ञान,
सुझाते हो तुम पथ अनजान,
फूँक देते छिद्रों में गान,
अहे सुख-दुःख के सहचर मौन।
नहीं कह सकती तुम हो कौन।

(नवम्बर, 1923, पल्लव)

सन्दर्भ और प्रसंग

'मौन निमंत्रण' सुमित्रानंदन पंत की एक प्रसिद्ध कविता है। इसका रचना-काल नवम्बर, 1923 है। आगे चलकर यह कविता 'पल्लव' (1926) में संगृहीत हुई। इस कविता में छायावाद की कई प्राथमिक विशेषताएँ मौजूद हैं। प्रकृति में मनुष्य को देखने की प्रवृत्ति का सुंदर उदाहरण है यह कविता। इसमें 'बाल सुलभ जिज्ञासा' को अपने सुंदर रूप में देखा जा सकता है। पन्त को 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा जाता है। उनकी इस विशेषता को यह कविता अच्छी तरह दर्शाती है। पंत ने कौतूहल भाव से यह बताया है कि प्रकृति के विभिन्न उपादानों से उन्हें आमंत्रण के संकेत मिलते हैं। मतलब यह कि प्रकृति संवेदनशील मनुष्य को अपनी तरफ आकर्षित करती है। आकर्षण के कई पक्षों को इस कविता में जिज्ञासा और कौतूहल के साथ प्रस्तुत किया गया है।

कठिन शब्द

1. स्तब्ध ज्योत्स्ना - स्थिर रूप से बरसती हुई चाँदनी 2. विश्व के पलकों पर - रात में मानो पूरा संसार सोया है और उसकी पलकों पर सपने विचरण कर रहे हैं 3. स्वप्न अजान - अनजाने सपने 4. नक्षत्रों - सितारों 5.सघन मेघों - गहरे बादल 6. भीमाकाश - विशाल आसमान 7.तमसाकार - तमसआकार, आकार के रूप में केवल अँधेरे का दिखना 8.समीर - हवा 9.निःश्वास - गहरी साँस 10. पावस धार- वर्षा ऋतु की बारिश 11. तपक तड़ित - चंचल आकाशीय बिजली 12. इंगित - संकेत, इशारा 13. वसुधा का यौवन भार - वसंत ऋतु में धरती की शोभा यौवन के सम्भार की तरह लगती है 14. मधुमास - वसंत का महीना 15. विधुर उर - वियोगी व्यक्ति का मन 16. उद्‌गार - अकृत्रिम अभिव्यक्ति 17. सोच्छ्‌वास - आह के साथ साँस का निकलना 18. सौरभ के मिस - सुगंध के बहाने 19. क्षुब्ध जल शिखरों - बेचैन लहरें 20. वात - हवा 21. फेनाकार - फेन के आकार का बना देना 22. बिथुरा - बिखेर देना 23. स्वर्ण - सुबह का सुनहला रंग 24. श्री - शोभा, सौन्दर्य 25. बोर - डुबो देना सराबोर कर देना 26. विहग कुल - पक्षियों का झुण्ड 27. कल कंठ हिलोर - सुंदर कंठ से उठाई गई मधुर तान 28. अलस पलक - अलसायी हुई पलकें 29. तुमुल तम - घना अँधेरा 30. एकाकार - एक आकार, एक आकार का दिखना 31. भीरु झींगुर कुल - डरपोक झींगुरों का झुण्ड, इन कीड़ों की आवाज तो तेज होती है मगर ये दिखाई नहीं पड़ते हैं 32.तन्द्रा के तार - नींद से पहले की खुमारी का क्रम 33. खद्योतों - जुगनुओं 34. कनक छाया - सुबह का सुनहला माहौल 35. सकाल - सुंदर काल, सुबह 36. सुरभि पीड़ित मधुपों के बाल - सुगंध से बेचौन किशोर उम्र के भौंरे 37.गुरुतर भार - कठिन और बड़ी जिम्मेदारियाँ 38.सुवर्ण अवसान - शाम के सुनहले माहौल में दिन की समाप्ति 39. शून्य शय्या - एकांत बिस्तर 40. श्रमित अपार - अत्यधिक थक जाना 41. छाया जग - सपनों का अवास्तविक संसार 42. द्युतिमान - प्रकाशमान 43. अज्ञात पथ-प्रदर्शक 44. छिद्रों में गान - कानों में गीतों की अनुगूँज भर देना 45. सुख-दुःख के सहचर - सुख और दुःख में साथ देनेवाला वह अज्ञात

व्याख्या

सुमित्रानंदन पन्त ने 'मौन निमंत्रण' कविता की शुरुआत रात की प्रकृति से की है। वे लिखते हैं कि रात में चाँदनी फैली हुई थी। चाँदनी में किसी तरह की चंचलता नहीं थी, वह स्थिर थी। उस चाँदनी में डूबा हुआ संसार नादान शिशु की तरह चकित भाव से मानो सोया हुआ था। सोये हुए संसार की पलकों पर मानो अनजान सपनों का विचरण हो रहा था। ऐसे समय में मैंने देखा कि आकाश में फैले हुए सितारों के बीच कोई है जो मुझे चुपचाप इशारों से निमंत्रण दे रहा है। वह कौन है? मैं नहीं जानता।

पन्त ने प्रकृति के कई दृश्यों को रखते हुए मौन निमंत्रण के भाव को व्यक्त किया है।

जब विशाल आकाश सघन मेघों से भर जाता है और गुरजता है, तब लगता है कि उसने तमस (अँधेरा) का रूप धारण करके गर्जना की है। बादलों के छा जाने के बाद हवा की गति ऐसी लगती है मानो वह लम्बी साँसें ले रही हो। और उसके बाद बरसात की प्रखर वृष्टि होने लगती है। इन सबके बीच जब चंचल बिजली चमकती है, तो मुझे लगता है कि इस बिजली में कोई है जो मुझे चुपचाप मेरी तरफ इशारा कर रहा है।

वसंत ऋतु में धरती अपनी यौवनावस्था में होती है। वह यौवनोचित सौन्दर्य-भार से युक्त होती है। उसकी सुंदरता को देखकर वसंत (मधुमास) के भौंरे अपनी गुनगुनाहट से अनुगूँज भर देते हैं। इस ऋतु में फूलों का खिलना ऐसे लगता है मानो किसी वियोगी के हृदय से कोमल उद्‌गार उच्छ्‌वास के साथ निकल रहे हों। खिले हुए इन फूलों के बीच कोई है जो सुगंध के बहाने मेरे पास अपने संदेश चुपचाप भेज देता है।

अगला दृश्य समुद्र का है। हवा समुद्र की ऊँची लहरों को मथकर फेन-फेन कर देती है। ऐसा लगता है मानो समुद्र फेन के आकार का हो गया है। फेन में बुलबुलों का संसार निर्मित हो जाता है। जब बुलबुले बुदबुद होकर बनते-बिगड़ते हैं तब वे व्याकुल मालूम पड़ते हैं। बुलबुलों से बने हुए इस व्याकुल संसार को बनानेवाली हवा पुनः इसे बिखेर भी देती है। वह ऐसा क्यों करती है? यह सब अज्ञात सा लगता है। इन दृश्यों के बीच समुद्र की लहरों से किसी का हाथ इशारे करता हुआ मुझे मालूम पड़ता है न जाने वह कौन है जो लहरों में छुपकर, हाथ के इशारे से, मुझे अपनी तरफ बुलाता हुआ मालूम पड़ता है।

अगला दृश्य भोर का है। भोर अपने प्रभाव में विश्व को ले लेती है। भोर के प्रभाव को व्यक्त करते हुए पंत लिखते हैं कि वह सुनहला प्रकाश, सुखद वातावरण, शोभाशाली छवियों और असंख्य सुगन्धों में विश्व को डुबो देती है। भोर होते ही झुण्ड के झुण्ड पक्षी अपने कोमल कंठ-स्वरों से धरती-आकाश के ओर-छोर को एक कर देते हैं। ऐसे समय में, मेरी अलसायी हुई पलकों को, पंखुड़ियों की तरह, कौन आकर चुपचाप खोल देता है।

घने अँधेरे में डूबा हुआ संसार अब तक एकाकार था और ऊँघ रहा था। डरपोक झींगुर छिपकर अपने समूह के साथ झंकार पैदा कर रहे थे। उनकी तेज आवाज से तन्द्रा के तार काँप जा रहे थे। उनकी आवाज से उनींदापन दूर हो जा रहा था। रात के अँधेरे में जुगनुओं के बीच कोई था जो मुझे चुपचाप अपनी जलती-बुझती चमक से चुपचाप रास्ता दिखा रहा था।

सुबह स्वर्णिम छाया में डूबी थी। सुबह-सुबह कलियाँ खिलने के क्रम में थीं, मानो वे अपने हृदय के द्वार खोल रही थीं। किशोर-उम्र के भौंरे कलियों की सुगंध से मानो बेचौन हो उठे थे। उनकी तड़प मानो गुंजार बनकर सुनायी पड़ रही थी। इसी बीच, ढुलकती हुई ओस की बूँदों में, कोई है जो अपने इशारे के कारण मेरी निगाहों को अपनी ओर चुपचाप खींच लेता है।

कविता के अंतिम हिस्से में पंत लिखते हैं कि दिन भर ढेर सारे गम्भीर कामों को सम्पन्न करते हुए एक स्वर्णिम समापन की तरह मैं संध्याकाल तक पहुँचता हूँ। फिर रात में सूने एकांत बिछावन पर थककर लेट जाता हूँ। कविता की इन अंतिम पंक्तियों पर पहुँचकर पता चलता है कि पंत ने यह कविता स्वयं को स्त्री-रूप में रखकर लिखी है कि मैं अपने आकुल-व्याकुल प्राणों को रात में विश्राम और तसल्ली प्रदान करती हूँ। तब न जाने कौन चुपचाप मुझे सपनों के लोक में घुमाने ले जाता है। वह लोक छाया से बना होता है और बहुत आकर्षक होता है। पंत उस अज्ञात को 'द्युतिमान' को कहते हैं अर्थात् वह प्रकाश-पुंज की तरह है। पंत उसे सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि हे द्युतिमान। मैं तुम्हें नहीं जानती। तुम मुझे अबोध और अज्ञानी मानकर, मेरे जीवन के अनजान रास्तों को सुगम बनाते हो। तुम मेरे कानों में अपने सुंदर गान भर देते हो। तुम मेरे सुख और दुःख के साथी हो। मगर मैं नहीं जानती कि तुम हो कौन?

काव्य सौष्ठव / विशेष

- छायावाद के शुरुआती दौर की यह प्रौढ़ रचना है।
- प्रकृति के प्रति आत्मीय जिज्ञासा से यह कविता भरी-पूरी है।
- इस कविता में प्रकृति के मानवीकरण की प्रवृत्ति भरपूर है।
- इस कविता की प्रश्नाकुलता में सौन्दर्य भरा है।
- इसकी प्रत्येक पंक्ति में 16-16 मात्राएँ हैं।

बोध प्रश्न-1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1. 'पल्लव' शीर्षक कविता में किस विषय पर विचार किया गया है ?

.....

.....

.....

.....

2. 'प्रथम रश्मि' कविता का क्या महत्त्व है?

.....

.....

.....

.....

3. 'प्रथम रश्मि' शीर्षक कविता में चिड़िया के लिए किन-किन संबोधनों का प्रयोग हुआ है?

.....

.....

.....

.....

4. 'मौन निमंत्रण' कविता में कवि को कहाँ-कहाँ से निमंत्रण मिलता है ?

.....

.....

.....

.....

5. प्रकृति और मनुष्य के रिश्ते को 'मौन निमंत्रण' कविता किस रूप में व्यक्त करती है?

.....

.....

.....

.....

6. नीचे प्रश्न के साथ कुछ विकल्प दिए जा रहे है। उत्तर के लिए सही विकल्प को चिन्हित कीजिए।

i. 'प्रथम रश्मि' शीर्षक कविता किस पुस्तक में है?

क) पल्लव ख) वीणा ग) गुंजन घ) ग्राम्या

ii. 'प्रथम रश्मि' किस प्रकार की कविता है?

क) छायावादी ख) प्रगतिवादी ग) प्रयोगवादी घ) रीतिवादी

iii. 'स्वप्न नीड़' में कौन-सा अलंकार है\

क) उपमा ख) रूपक ग) रूपकातिशयोक्ति घ) उत्प्रेक्षा

iv. 'नभचर' का क्या अर्थ है?

क) सुबह ख) क्षितिज ग) धरती घ) बादल

v. 'शशिबाला निशि के श्रम से' क्या हो गयी थी?

क) उज्ज्वल ख) मनमोहिनी ग) श्रीहीन घ) नभचारिणी

vi. 'पल्लव' काव्य-संग्रह का प्रकाशन कब हुआ था ?

क) 1925 ख) 1926 ग) 1936 घ) 1918

vii. 'पल्लव' शब्द का प्रयोग किसे प्रतीकित करने के लिए किया गया है ?

क) कोमलता ख) प्रकृति ग) आकाश घ) कविता

viii. 'मौन निमंत्रण' कविता का प्रथम प्रकाशन कब हुआ था?

क) 1923 ख) 1936 ग) 1918 घ) 1934

ix. 'मौन निमंत्रण' शीर्षक कविता किस पुस्तक में है

क) ग्रन्थि ख) गुंजन ग) वीणा घ) पल्लव

x. 'मौन निमंत्रण' कविता में कितनी मात्रा की पंक्तियों का उपयोग हुआ है?

क) 12 ख) 14 ग) 16 घ) 18

xi. सुमित्रानंदन पंत का जन्म कब हुआ था?

क) 1900 ख) 1895 ग) 1905 घ) 1907

xii. 'भीमाकाश' का अर्थ बताएँ ?

क) बहुत बड़ा ख) भयंकर ग) भीमसेन घ) विशाल आकाश

xiii. 'मौन निमंत्रण' कविता में किस कोटि की 'जिज्ञासा' प्रकट हुई है?

क) दार्शनिक ख) स्त्रियोचित ग) परिपक्व घ) बालसुलभ

xiv. 'प्रकृति का सुकुमार कवि' किसे कहा गया है?

क) जयशंकर प्रसाद ख) सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ग) सुमित्रानंदन पंत
घ) महादेवी वर्मा

16.3 सारांश

- पंत ने छायावाद की शुरुआती कविताओं को पल्लव की तरह कोमल और सुंदर बताया है। पल्लव के रूपक का विस्तार करते हुए उन्होंने उस सौन्दर्य-बोध को रखने की कोशिश की है जिसके सहारे इन कविताओं को ठीक से समझा जा सके।
- कवि अपनी बाल-सुलभ जिज्ञासा को प्रकट करता हुआ चिड़िया से कई प्रश्न कर रहा है। उन प्रश्नों में जागरण के संकेत हैं।
- कवि ने प्रकृति के विभिन्न रूपों के प्रति अपने मानवीय आकर्षण को व्यक्त करने के लिए यह कविता रची है। प्रकृति और मनुष्य के अटूट सम्बन्ध को आत्मीय तरीके से पेश करती हुई यह कविता बताती है कि छायावाद का मानवीकरण केवल अलंकार नहीं है बल्कि एक तरह की जीवन-दृष्टि और विश्व-दृष्टि है।

16.4 उपयोगी पुस्तकें

1. छायावाद- नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
2. सुमित्रानंदन पंत ग्रन्थावली (कुल सात खंड)- राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
3. छायावादी काव्य-कोश- कमलेश वर्मा, सुचिता वर्मा, द मार्जिनलाइज्ड प्रकाशन, मैंदान गढ़ी, दिल्ली ।

16.5 बोध प्रश्नों /अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1. पल्लव' शीर्षक कविता में पन्त ने इस बात पर विचार किया है कि उनकी छायावादी कविताओं को समझने के लिए नए सौन्दर्य-बोध और भाषा-बोध की जरूरत है। इस कविता में जो बातें कही गयी हैं वे अवान्तर से दूसरे छायावादी कवियों पर भी लागू होती हैं। पंत इस कविता में बताते हैं कि अभी ये कविताएँ पल्लव की तरह हैं। अभी इनमें विकास की ढेर सारी सम्भावनाएँ हैं। 1924 में लिखी गयी यह कविता उम्मीद से भरी है। कवि का विश्वास है कि आगे चलकर छायावादी कविताएँ और दूसरी-दूसरी विशेषताओं से युक्त होंगी।
2. 'प्रथम रश्मि' शीर्षक कविता 1919 में लिखी गयी थी। छायावाद के प्रारंभ होते ही लिखी गयी यह कविता भाव और भाषा की - दृष्टि से अत्यंत परिपक्व है। इसमें प्रकृति के प्रति बाल-सुलभ जिज्ञासा प्रकट की गयी है। पंत को इस तरह की कविताओं के कारण ही 'प्रकृति का सुकुमार कवि' कहा गया है। यह कविता एक तरह का जागरण गीत भी है।
3. 'प्रथम रश्मि' शीर्षक कविता में चिड़िया के लिए निम्नलिखित संबोधनों का उपयोग हुआ है - रंगिणि, बाल विहंगिनि, तरुवासिनि, अंतर्यामिनि, बहु दर्शिनि, नभचारिणि।
4. उत्तर 'मौन निमंत्रण' कविता में कवि को निम्नलिखित जगहों से निमंत्रण मिलता है - नक्षत्रों से, तड़ित से, सौरभ से, लहरों से, दल से, खद्योतों से, ओस से।
5. 'मौन निमंत्रण' शीर्षक कविता छायावाद की एक प्रतिनिधि रचना है। छायावाद की सबसे बड़ी पहचान यह बतायी गयी है कि इसमें प्रकृति में मनुष्य को देखने की प्रवृत्ति पायी जाती है। प्रकृति को मनुष्य की तरह समझने की प्रवृत्ति इन कविताओं को रोमानियत की भूमि से जोड़ती है। ये कविताएँ मनुष्य को प्रकृति की विराटता में समझने की कोशिश हैं। पंत ने इस कविता में यही लिखा है कि प्रकृति के विभिन्न घटक मुझे इशारे से अपनी तरफ बुलाते हैं। इस कविता में प्रकृति में मानवीय भाव समाए हुए दिखाए गए हैं और मनुष्य को एक ऐसे सौन्दर्य-बोध से जोड़ा गया है जो प्रकृति के रूप में विराट और व्यापक है।
6. i) ख
   ii) क
   iii) ख
   iv) घ
   v) ग

vi) ख

vii) घ

viii) क

ix) घ

x) ग

xi) क

xii) घ

xiii) घ

xiv) ग

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY